SURVEY OF INDIA

Survey of India, the principal mapping agency of the country is celebrating its 250th anniversary in year 2017. Origin of the Survey of India can be traced back to Year 1767, when Major James Rennell was appointed as the Surveyor General of Bengal. It is the oldest scientific department in India and one of the oldest survey establishments in the world. Survey of India also has the distinct honour of printing the first Postage Stamp of India and the first copy of the Constitution of India.

Officers and staff of the Survey of India have to pioneer untrodden lands for others to follow and build upon. They have to go to the deepest forests, deserts and the highest snowy mountains – in fact they are the first to reach virgin and uninhabited areas. There they ceaselessly, faithfully and unobtrusively toil to produce the maps so essential for development, defence and administration. In the process, they get familiar with each and every corner of the country and its deep interiors and mingle with the soil and the dust and the people of India. Topographical maps have played an invaluable role in the saga of India's nation building and were pivotal in the foundation of almost all major developmental activities of the modern India.

The Survey of India acts as advisor to the Government of India on all survey matters, viz geodesy, photogrammetry, mapping and map reproduction. However, the main duties and responsibilities of the Survey of India are enumerated below:

(a) All geodic control (horizontal and vertical) and geodic surveys (including tide predictions for 40 ports in Indian Ocean, Arabian Sea and Bay of Bengal, in the region from Suez to Singapore) and allied geophysical surveys.

(b) All topographical control surveys and mapping within India.

(c) Mapping and production of geographical maps and aeronautical charts.

(d) Surveys for development projects.

(e) Surveys of forests, cantonments, large scale city surveys, guide maps, etc.

(f) Survey and mapping of special maps e.g., riverain areas and geographical explorations authorized by the Government of India.

(g) Spelling of geographical names.

(h) Demarcation of the external boundaries of the Republic of India, their depiction on maps published in the country and also advice on the demarcation of interstate boundaries.

(i) Training of officers and staff required for the department, trainees from Central Government Departments and States and trainees from foreign countries as are sponsored by the Government of India.

(j) Research and development in cartography, printing, geodesy, photogrammetry, topographical surveys and indigenization.

(k) Co–ordination and control in providing aerial photographic cover over the whole of the country.

The Survey of India, fondly called 'the Department' by its members is built on solid foundations, strong traditions and deep roots, keeps striving to keep India among the best surveyed countries in the world, adopting the latest technologies to meet new challenges and always living up to its motto: A Setu Himachalam i.e. 'From Setu to the Himalaya' (covering entire India).

The Department has met the challenges of surveying the indomitable Himalaya, blazing deserts and disease and animal infested jungles. The Department is continuously striving to keep abreast of modern technology and has successfully entered the era of Digital Mapping and Geographic Information Systems.

Presently, Survey of India is organised into 08 Zones, 23 Geo-Spatial Data Centres/Regional directorates, 06 Specialised directorates and 01 Training directorate covering 29 States and 09 UTs. The manpower resource consists of total ≈ 5500 personnel. Each Zone office has several regional directorates under it; each regional directorate is responsible to cater for all topographical and developmental surveying & mapping requirements of that State or group of small States. The Specialised Directorates are the Geodetic and Research Branch, International Boundary Directorate, GIS & Remote Sensing Directorate, National Geo-spatial data centre, Digital Mapping Centre and Map Archival & Dissemination Center. The Training directorate i.e. India Institute of Surveying and Mapping (IISM) runs basic, refresher, specialised and advanced courses in Photogrammetry, Geodesy, Cartography and GIS domains.

The occasion of completion of 250 years of Survey of India also provides a good opportunity to showcase the historical value of Survey of India to common people and also demonstrate its immense potential, technical strength and achievements of the past 250 years.

The department shares a special bond with the Department of Posts as Survey of India had the distinct honour of printing the first postage stamp of India. The Department of Posts is pleased to issue a set of two commemorative postage stamps on the occasion of 250th anniversary of Survey of India.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent

Stamps/Miniature Sheet/FDC/ Brochure/Cancellation Cachet : Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



भारतीय सर्वेक्षण विभाग SURVEY OF INDIA

विवरणिका
BROCHURE

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जोकि राष्ट्र की एक प्रमुख मानचित्रण एजेंसी है, वर्ष 2017 में अपनी 250वीं वर्षगांठ मना रहा है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग की स्थापना वर्ष 1767 में हुई थी जब मेजर जेम्स रैनल को बंगाल के महासर्वेक्षक के पद पर नियुक्त किया गया। यह भारत का एक प्राचीनतम वैज्ञानिक विभाग एवं विश्व का एक प्राचीनतम सर्वेक्षण संस्थान है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग को ही भारत के प्रथम डाक टिकट एवं भारत के संविधान की प्रथम प्रति को मुद्रित करने का विशिष्ट सम्मान प्राप्त हुआ है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी ही सर्वप्रथम निर्जन भू-भागों का पता लगाते हैं और दूसरे लोग तत्पश्चात इन क्षेत्रों में निर्माण और विकास कार्य करते हैं। वे घने जंगलों, रेगिस्तान और ऊंचे बर्फीले पर्वतों पर जाते हैं तथा वास्तव में वे लोग ही निर्जन एवं वीरान क्षेत्रों में सबसे पहले पहुंचते हैं। वहां वे निरंतर, निष्ठापूर्वक और सावधानीपूर्वक परिश्रम करते हैं ताकि विकास, रक्षा और प्रशासन के लिए अति आवश्यक मानचित्रों को बनाने का कार्य किया जा सके। इस प्रक्रिया में, देश के कोने-कोने और इसकी गहरी आंतरिकता से उनकी पहचान होती है और वे धूल, मिट्टी एवं भारत के लोगों के साथ घुलमिल जाते हैं। भारत राष्ट्र के निर्माण के आख्यान में स्थलाकृतिक मानचित्रों ने अमूल्य भूमिका निभाई है तथा आधुनिक भारत की लगभग सभी प्रमुख विकासात्मक गतिविधियों की नींव रखने में इसकी केन्द्रीय भूमिका रही है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, सर्वेक्षण संबंधी सभी मामलों जैसे ज्योडीय, फोटोग्राममिति, मानचित्रण और मानचित्र पुनरूत्पादन में भारत सरकार के सलाहकार के रूप में कार्य करता है। तथापि, भारतीय सर्वेक्षण विभाग के प्रमुख कार्य एवं दायित्व निम्नवत हैं :-

(क) सभी ज्योडीय नियंत्रण (क्षैतिज और उर्ध्वाधर) और ज्योडीय सर्वेक्षण (हिंद महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी में सिंगापुर से स्वेज तक के क्षेत्र में 40 पत्तनों के लिए ज्वार-भाटा भविष्यवाणियों सहित) तथा संबद्ध भू भौतिकीय सर्वेक्षण करना।

(ख) भारत में सभी स्थलाकृतिक नियंत्रण सर्वेक्षण और मानचित्रण करना।

(ग) भौगोलिक मानचित्रों और वैमानिक चार्टों का मानचित्रण और पुनरूत्पादन करना।

(घ) विकास परियोजनाओं के लिए सर्वेक्षण।

(ङ) वनों, छावनियों, बृहत पैमाने पर शहरों का सर्वेक्षण, परिदर्शी मानचित्रों आदि का सर्वेक्षण करना।

(च) नद तटीय क्षेत्रों जैसे विशेष मानचित्रों का सर्वेक्षण और मानचित्रण और भारत सरकार द्वारा अधिकृत भौगोलिक अन्वेषणों के लिए विशेष मानचित्रों का सर्वेक्षण एवं मानचित्रण करना।

(छ) भौगोलिक नामों की वर्तनी।

(ज) भारत गणराज्य की बाहरी सीमाओं का सीमाकंन, देश में प्रकाशित मानचित्रों पर उनका चित्रण और अंतर्राज्यीय सीमाओं के सीमांकन पर परामर्श देना।

(झ) विभागीय अधिकारियों और स्टाफ हेतु आवश्यक प्रशिक्षण, केन्द्र और राज्य सरकार के विभागों और भारत सरकार द्वारा प्रायोजित विदेशी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देना।

(ञ) कार्टोग्राफी, मुद्रण, ज्योडेसी, फोटोग्राममिति, स्थलाकृतिक सर्वेक्षण और स्वदेशीकरण में अनुसंधान और विकास करना।

(ट) संपूर्ण देश में हवाई फोटोग्राफी आवरण प्रदान करने में समन्वय और नियंत्रण स्थापित करना।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जिसे इसके स्टाफ सदस्य सम्मानपूर्वक 'विभाग' कहते हैं, का निर्माण ठोस नींव, महान परम्पराओं और गहरी जड़ों के आधार पर हुआ है। भारतीय सर्वेक्षण विभाग, भारत को विश्व का बेहतर सर्वेक्षित देश बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है तथा नई चुनौतियों का सामना करने के लिए नवीनतम तकनीकी को अपनाया जा रहा है। इस प्रकार विभाग, अपने आदर्श वाक्य: ए सेतु हिमाचलम अर्थात् 'सेतु से हिमालय तक' (सम्पूर्ण भारत को कवर करते हुए) को सार्थक करता है।

विभाग ने अजेय हिमालय, तपते रेगिस्तान, भयानक बीमारियों और जंगली जानवरों से भरे जंगलों में सर्वेक्षण की चुनौतियों का सामना किया है। विभाग, आधुनिक तकनीकी को अपनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है तथा विभाग ने डिजिटल मानचित्रण और भौगोलिक सूचना पद्धति के युग में सफलतापूर्वक पदार्पण किया है।

वर्तमान में भारतीय सर्वेक्षण विभाग को, 29 राज्यों तथा 09 संघ शासित क्षेत्रों को समाहित करते हुए 08 जोनों, 23 भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्रों/क्षेत्रीय निदेशालयों, 06 विशिष्ट निदेशालयों और 01 प्रशिक्षण निदेशालय में संगठित किया गया है। विभाग के जनशक्ति संसाधनों में 5500 कार्मिक हैं। प्रत्येक जोन कार्यालय के अधीन कुछ क्षेत्रीय निदेशालय कार्यरत हैं, प्रत्येक क्षेत्रीय निदेशालय, उस राज्य या छोटे राज्यों के समूहों की सभी स्थालाकृतिक और विकासात्मक सर्वेक्षण और मानचित्रण की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उत्तरदायी है। विशिष्ट निदेशालयों में ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा, अन्तर्राष्ट्रीय सीमा निदेशालय, भौगोलिक सूचना पद्धति और सुदूर संवेदन निदेशालय, राष्ट्रीय भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, अंकीय मानचित्रण केन्द्र तथा मानचित्र अभिलेख और प्रसार केन्द्र शामिल हैं। प्रशिक्षण निदेशालय अर्थात् भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान (आई०आई०एस०एम०) में फोटोग्राममिति, ज्योडेसी, मानचित्रकला और भौगोलिक सूचना पद्धति जैसे विषयों में प्रारम्भिक, पुनश्चर्या, विशिष्ट और उन्नत पाठयक्रम चलाए जा रहे हैं।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के 250 वर्ष पूरे किए जाने का अवसर, जनसाधारण के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग के ऐतिहासिक महत्व को प्रदर्शित करने के साथ ही, भारतीय सर्वेक्षण विभाग की अपार संभावनाओं, तकनीकी क्षमताओं तथा विगत 250 वर्षों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का सुअवसर प्रदान करता है।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का डाक विभाग के साथ विशेष संबंध है, क्योंकि भारतीय सर्वेक्षण विभाग को पहला भारतीय डाक टिकट मुद्रित करने का विशेष सम्मान प्राप्त है। डाक विभाग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग की 250वीं वर्षगांठ के अवसर पर दो स्मारक डाक-टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित

डाक टिकट/मिनियेचर शीट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1500 पैसा, 500 पैसा
Denomination	:	1500 p, 500 p
मुद्रित डाक टिकटें मूल्य वर्ग 500 पैसा	:	501250
Stamps Printed Denomination 500 p	:	501250
मुद्रित डाक टिकटें मूल्य वर्ग 1500 पैसा	:	401250
Stamps Printed Denomination 1500 p	:	401250
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.0 लाख
Miniature Sheet Printed	:	0.1 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00